International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.959 Volume 9, Issue 1, January 2022
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कालिदासीय प्रकृति-चित्रण

डॉ. रामबाबू, सहायक आचार्य, संस्कृत
महारानी श्री जया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भरतपुर (राज.)

प्रकृति आदिकाल से मानव की सहचरी रही है । वह एक उपदेशक के रूप में मानव का रास्ता प्रशस्त करती रही है। प्रकृति मानव मन को परिमार्जित कर उसे कर्तव्य पथ पर अग्रसर करती आयी है। वह मानव के साथ सुख-दुःख में हमेशा सहभागिता निभाती आयी है। जब मनुष्य आनन्दमय होता है तो प्रकृति का हर पहलू उसे आनन्दमय प्रतीत होता है। जब वह दुःखी होता है तो प्रकृति भी उसके साथ पीडित दिखाई देती है। इस विषय में राम का वनगमन प्रसंग' अद्वितीय उदाहरण है । जब राम सीता के साथ वन में होते हैं तो दुर्गम रास्तों के बीच भी प्रकृति उन्हे आनंदित करती है। वनवास भी स्वर्ग लगता है किंतु सीताहरण के पश्चात् राम का वियोग मानो प्रकृति को विचलित कर देता है । अब वही प्रकृति राम के वियोग में शामिल दिखाई देती है। इस तरह प्रकृति का जुडाव मानव के हर क्षेत्र में है। प्रकृति के अभाव में मानव नवचेतना का संचार असंभव प्रतीत होता है।

कविकुल चूड़ामणि, माँ सरस्वती के वरदपुत्र तथा भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्याकाश के दैदीप्यमान मार्तण्ड है। सर्वतोमुखी प्रतिभा उन्हें विश्वसाहित्यागार में अद्वितीय स्थान प्रदान करती है । महाकवि कालिदास ने अपनी लेखनी का काव्य की सभी विधाओं मे लोहा मनवाया है। महाकवि कालिदास एक यशस्वी कृतिकार के रुप में एक सफल महाकाव्यकार, खण्डकाव्यकार या गीतिकाव्यकार एवं नाटककार के रुप

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

में विश्व साहित्य में विश्रुत है | किसी पुरातन कवि ने कालिदास का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि -

"पुरा कवीनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदास:।

अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव॥[1]

जब श्रेष्ठ कवियों की गणना करने लगता हूँ तो कनिष्ठिका अंगुली पर पहला नाम कालिदास का आता है, दूसरी जो अनामिका नामक अंगुली है, उस पर कोई नाम सूझता ही नहीं, क्योंकि आज तक उनकी समकक्षता करने वाला कोई दूसरा कवि हुआ ही नहीं है, अत: ऐसा मालूम पड़ता है कि दूसरी अंगुली का नाम अनामिका सार्थक है। महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों में प्रकृति का अद्‌वितीय चित्रण किया है |

कालिदास प्रकृति के सूक्ष्म द्रष्टा एवं प्रवीण चितेरे है । उन्होंने अपने ग्रन्थों में वन एवं पुष्पों का अद्‌वितीय वर्णन उपस्थापित किया है कालिदास की प्रकृति भी जीवन के स्पन्दन के साथ-साथ सजीव प्रतीत होती है तथा मनुष्य को प्रतिदिन नूतन ऊर्जा एवं शक्ति प्रदान करती है। शायद ही विश्व में कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने सजीव प्रकृति का इतना सूक्ष्म एवं सम्पूर्ण अध्ययन किया हो, जितना कि कालिदास ने किया है इससे यह प्रतीत होता है कि महाकवि कालिदास प्रकृति की गोद में ही पले बढ़े हैं।

महाकवि कालिदास ने स्व ग्रन्थों में प्रकृति के बाहरी एवं अन्त: दोनों रूपों का बहुत मनोहर सामंजस्य स्थापित किया है। कवि के काव्य में प्रकृति आलम्बन, उद्‌दीपन, मानवीकरण एवं आलङ्कारिक आदि विभिन्न रूपों में चित्रित मिलती है। महाकवि के ग्रन्थों में प्राकृतिक दृश्यों के स्वाभाविक, हृदयग्राही तथा मनोहारी चित्र प्रचुरता में समाहित मिलते हैं। महाकाव्य कुमारसम्भव का तो प्रारम्भ ही प्रकृति की रमणीयता के साथ होता है। मंगलाचरण के रुप में हिमालय की छटा का गुणगान किया गया है -

"अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधावगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥[2]

रघुवंश में भी कवि ने प्रकृति के सहज, सरल, स्वाभाविक पहलूओं को चित्रित किया है। प्रथम सर्ग में ऋषि वशिष्ठ के आश्रम की छटा को सुन्दर छवि के रूप में प्रस्तुत किया है-

मनोभिरामाः श्रृण्वन्तौ रथनेमिस्वनोन्मुखैः।
षडजसंवादिनीः केका द्विधाभिन्नाः शिखण्डिभिः॥[3]

ऋषि आश्रमों के सुरम्य प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन प्रचुर मात्रा में मिलता है। अभिज्ञानशाकुन्तल में ऋषि कण्व के आश्रम का वर्णन प्राकृतिक सुन्दरता से ओतप्रोत है-

नीवाराः शुकगर्भ कोटरमुखभ्रष्टास्तरुणामधः,
प्रस्निग्धाः क्वचिदिंगुदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः।
विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्द सहन्ते मृगा-
स्तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखांकिताः॥[4]

अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रकृति का वर्णन अत्यन्त सूक्ष्म एवं हृदयग्राही है। उसकी नायिका शकुन्तला मानो प्रकृति की पुत्री है। और उसी की गोद में पलकर सहेजकर बढ़ी हुई है। शकुन्तला को पुत्री के रूप में विदा करते हुए प्रकृति की करुणापूर्ण उद्विग्नता मानवीकरण से युक्त है-

"उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्त नर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः॥[5]

अचेतन प्राणियों के प्रति चेतन मानव की आत्मीयता का इससे सुन्दर उदाहरण विश्व साहित्य जगत् में कोई हो नहीं सकता है। स्वभावतः शकुन्तला को प्रकृति से अलग देखना संभव नहीं है क्योंकि उसके पालन-पोषण में प्रकृति ने अहम भूमिका निभायी है। जब शकुन्तला का जन्म होता है तो माता-पिता के द्वारा जंगल में छोड़ दिया जाता है तब सबसे पहले शकुन्त नामक पक्षी ही उसका पालन एवं रक्षण करता है। उसके पश्चात् महर्षि कण्व के आश्रम में पालन-पोषण होता है। इसलिए उसके हृदय में प्रकृति से सम्बन्धित विषयों के प्रति असीम प्रेम है। वह तपोवून की लता के समान है। वन के वृक्ष उसके अपने सम्बन्धी हैं, तभी शकुन्तला के अप्रितम सौन्दर्य को देखकर दुष्यन्त कह उठता है-

अधर: किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्॥[6]

कवि ने प्रकृति को शकुन्तलामय एवं शकुन्तला को प्रकृतियुक्त प्रतिबिम्वित किया है क्योंकि शकुन्तला के बिना महर्षि कण्व के आश्रम की नैसर्गिक सारी प्रकृति सूनी है।

कालिदास का मेघदूत गीतिकाव्य तो प्रकृति चित्रण के बिना सम्भव ही नहीं है। इसमें हृदयग्राही, मनोहारी सर्वोत्तम प्रकृति के दृश्य मिलते हैं। इसके प्रत्येक श्लोक में प्रकृति की आशा भरी आत्मा की वेदना का चित्रण है। जिसके अन्दर संयमित, गाम्भीर्य एवं प्रसुप्त व्याग्रता का स्पष्ट भाव मिलता है। मेघदूत के शब्द-शब्द में प्राकृतिक सौन्दर्य दिखाई देता है, आम्रकूट पर्वत के शिखर पर काला मेघ है और आस-पास पके फलों से युक्त आम्र के वृक्ष है, कवि ने कल्पना की है कि यह पर्वत पृथ्वी के स्तन के समान शोभा को धारण करेगा-

'छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै -
स्त्वय्यारूढे शिखरमचल: स्निग्धवेणीसवर्णे।
नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां,
मध्ये श्याम: स्तन इव भुव: शेषविस्तारपाण्डु:॥[7]

बाह्य-प्रकृति के प्रति महाकवि कालिदास का अनन्य अनुराग है मेघदूत में कालिदास ने प्रकृति का सजीव एवं रमणीय रूप में चित्रण किया है साथ ही मानवीय चेतना एवं क्रिया कलापों का समारोप किया है। इसी भाव से कवि ने मेघदूत के प्रारम्भ में ही वायु एवं वाष्प से युक्त मेघ को मानवीय दूत बनाकर प्रस्तुत किया है-

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्त:,
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥[8]

साथ ही कालिदास की प्रकृति मानव के प्रति संवेदना एवं सहानुभूति रखती है। कालिदास के प्रकृति वर्णन की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि उन्होंने अपनी अलौकिक कल्पना एवं मेधा द्वारा प्रकृति में भावप्रवणता, गतिशीलता एवं चेतना का संचार किया है। शकुन्तला के सहजरुप लावण्य का मूर्तिमान रूप उपस्थित करने के लिए कवि ने शैवाल से ढके हुए कमल तथा कलंक से मण्डित चन्द्रमा से सहायता ली है-

'सरसिजमनुविद्ध शैवलेनापि रम्यं,
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इधयधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥[9]

कवि ने अपने काव्य में प्रकृति को मानव की सच्चे अर्थों में सहचरी बना दिया है। इसलिए शकुन्तला की विदाई के मौके पर वनदेवी उसके निमित्त वस्त्र व आभूषण समर्पित करती है। यह सब शकुन्तला के अनन्य प्रकृति प्रेम का प्रभाव ही है। कालिदास ने प्रकृति को विभिन्न रूपों में चित्रित किया है। उनके अनुसार प्रकृति मानव की चिरन्तन सहचरी तथा उसके स्वस्थ, सरस एवं मौलिक जीवन के लिए आवश्यक है। यदि कालिदास के काव्यों से प्रकृति को निकाल दिया जाये तो काव्य का सम्पूर्ण ढाँचा नष्ट हो जायेगा। कवि के काव्य में मनुष्य और प्रकृति रसायन के समान संश्लिष्ट हैं।

- + -

संदर्भ सूची

1- कुमारसम्भवम् विश्वनाथ कृत पृष्ठ संख्या 1
2- कुमारसम्भवम् 1.1
3- रघुवंशम् 1.39
4- अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1.13
5- तत्रैव 4.12
6. तत्रैव 1.19
7. मेघदूतम् पूर्वमेघ -18
8. मेघदूतम् पूर्वमेघ - 01
9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1.17